Tender Heart High School, Sector-33 B, Chandigarh.

कक्षा - नौवीं
विषय - हिन्दी साहित्य शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : साहित्य सागर

पाठ-6 'बड़े घर की बेटी' (कहानी) लेखक - प्रेमचन्द

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा नौवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य पुस्तक 'साहित्य सागर' की पृष्ठ संख्या-32 में दिए पाठ-6 'बड़े घर की बेटी' नामक कहानी पढ़ेंगे।

बच्चो ! पिछले सप्ताह हमने पढ़ा था कि बेनीमाधव सिंह गौरीपुर गाँव के ज़मींदार थे। अपनी आधी से अधिक संपत्ति उन्होंने वकीलों को भेंट कर दी थी। उनकी वार्षिक आय एक हज़ार रुपए से अधिक न थी। उनके दो बेटे थे। एक का नाम श्रीकंठ सिंह और दूसरे का नाम लाल बिहारी था। श्रीकंठ सिंह बी॰ ए॰ पास थे, फिर भी वह पाश्चात्य सामाजिक प्रथाओं के विशेष प्रेमी न थे। प्राचीन सभ्यता का गुणगान करना उनकी प्रकृति का प्रधान अंग था। वहीं दूसरा बेटा लाल बिहारी दोहरे बदन का सजीला जवान था, जो श्रीकंठ से एकदम विपरीत था। भूपसिंह एक छोटी-सी रियासत के बड़े जमींदार थे। वे अत्यधिक धन-धान्य से संपन्न व्यक्ति थे। आनंदी उनकी चौथी व अति सुन्दर पुत्री थी। वे धर्मसंकट में थे कि आनन्दी का विवाह कहाँ करें ? वे आनन्दी का विवाह ऐसी जगह करना चाहते थे, जिससे न तो उन पर अधिक ऋण का बोझ बढ़े और न ही उसे स्वयं को भाग्यहीन समझना पड़े। वे एक अच्छे और

कुशल व्यक्ति की तलाश में थे। एक दिन चंदा माँगने आए श्रीकंठ को देख भूपसिंह उसके व्यवहार पर रीझ गए और आनन्दी का विवाह श्रीकंठ के साथ हो गया।

बच्चो ! अब कहानी को आगे बढ़ाते हुए कहानी को पढ़ेंगे व समझेंगे।

आनन्दी के मायके और ससुराल में बहुत अंतर था। उसके मायके में धन-धान्य की कोई कमी नहीं थी। परन्तु ससुराल में कोई साधन नहीं था। मायके में बड़ा मकान, बड़े बाग, हाथी-घोड़े, नौकर-चाकर थे परन्तु ससुराल में ऐसी सुख-सुविधाएँ नहीं थीं। आनन्दी बहुत समझदार व व्यावहारिक स्त्री थी। ससुराल में सुख-सुविधाओं का अभाव होने पर भी आनन्दी ने इस नई परिस्थिति के अनुसार खुद को ढाल लिया था। आनन्दी ने सादगी को इस तरह अपनाया मानो उसने कभी कोई सुख देखा ही न हो।

एक दिन दोपहर के समय आनन्दी का देवर लाल बिहारी सिंह दो चिड़ियाँ लाया और आनन्दी से उन्हें पकाने को कहा। आनन्दी पहले से ही भोजन बनाकर उसकी राह देख रही थी। अब लालबिहारी के कहने पर वह नया व्यंजन बनाने लगी। आनन्दी ने मांस पकाते समय हाँडी में जो पाव भर घी था, वह सब उसमें डाल दिया। भोजन करते समय जब लालबिहारी ने देखा कि दाल घी के बिना है। दाल में घी न मिलने पर लाल बिहारी ने आनन्दी से पूछा कि दाल में घी क्यों नहीं डाला? तब आनन्दी ने उसे सारी बात बताई कि हाँडी में पाव भर घी ही बचा था, वह सब उसने माँस में डाल दिया। बिना घी की दाल देखकर लाल बिहारी भड़क गया और दोनों में (लालबिहारी और आनन्दी में) घी को लेकर बहस होने लगी। जब लालबिहारी ने कहा कि मायके में तो जैसे घी की नदियाँ बहती हैं। यह बात आनंदी को बहुत बुरी लगी। लाल बिहारी

ने आनन्दी को मायके के संबंध में चुभती बात कह दी अतः वह भड़क उठी। क्योंकि कोई भी स्त्री अपने मायके के संबंध में चुभती बात कह दी अतः वह भड़क उठी क्योंकि कोई भी स्त्री अपने मायके की निन्दा नहीं सह पाती है इसलिए आनन्दी ने कहा कि हमारे यहाँ तो इतना घी तो नित्य नाई-कहार खा जाते हैं। यह सुनकर लाल बिहारी को क्रोध आ गया। उसने थाली पलट दी और श्रीकंठ को देखलेने की धमकी भी दी। बात इतनी बढ़ी कि लाल बिहारी ने खड़ाऊँ उठाकर आनंदी की ओर फेंकी। आनन्दी ने हाथ से खड़ाऊँ रोकी इसलिए सिर तो बच गया पर उँगली में चोट आ गई। लाल बिहारी द्वारा खड़ाऊँ फेंककर मारने पर आनन्दी को बहुत क्रोध आता है, किंतु वह करती क्या? श्रीकंठ भी घर में नहीं था। आनन्दी का गुस्सा मानो सातवें आसमान पर था। वह समझदार थी और पति के वहाँ न होने के कारण उसने अपने गुस्से को काबू में कर लिया और दो दिन तक आनन्दी कोपभवन में रही। न कुछ खाया, न कुछ पिया, बस श्रीकंठ के आने की राह देखती रही।

शनिवार की शाम जब श्रीकंठ घर आए तो गाँव वालों से इधर-उधर की बातें करते-करते रात के दस बज गए। एकान्त मिलने पर लाल बिहारी ने आनन्दी की शिकायत करते हुए कहा कि भैया आप भाभी को (आनन्दी को) समझा दें कि वे मुँह सँभालकर बोला करें। अपने मायके के सामने हमें कुछ नहीं समझतीं। बेनीमाधव ने भी लाल बिहारी की इस बात का समर्थन किया।

आनन्दी लड़ाई-झगड़े की घटना को लेकर अत्यंत दुःखी थी। वह शीघ्र से शीघ्र अपने पति से लाल-बिहारी की शिकायत करना चाहती थी। वह अविलंब (बिना देर किए) श्रीकंठ से मिलना चाहती थी। इससे

पहले कि श्रीकंठ से आनंदी कुछ कहती। लालबिहारी ने ही श्रीकंठ से आनन्दी की शिकायत कर दी थी। बेनीमाधव ने भी लाल बिहारी का पक्ष लेते हुए कहा कि बहू-बेटियों का यह स्वभाव अच्छा नहीं है। इससे पता चलता है कि बेनीमाधव पुरुष प्रधान समाज के पक्षधर थे। वे स्त्रियों को समाज में बराबरी का दर्जा नहीं देना चाहते थे।

श्रीकंठ खाना खाकर आनन्दी के पास आए तो आनन्दी गुस्से में भरी बैठी थी अर्थात् वह बहुत क्रुद्ध बोलना चाहती थी। लालबिहारी के साथ विवाद हो जाने के कारण वह क्रोधित थी और श्रीकंठ के आने का इंतज़ार कर रही थी। श्रीकंठ के यह पूछने पर कि तुमने घर में क्या उपद्रव मचा रखा है ?, आनन्दी को क्रोध आ गया। श्रीकंठ सिंह ने आनन्दी से उसके क्रोध का कारण जानना चाहा क्योंकि श्रीकंठ उस दिन घर में नहीं थे। वे शनिवार को ही घर आया करते थे। अत: उन्हें घर में हुए झगड़े का पता नहीं था। आनन्दी ने आँखों में आँसू भरकर लालबिहारी के द्वारा किए गए दुर्व्यवहार और खड़ाऊँ फेंककर मारने वाली सारी घटना बताई। यह सुनकर श्रीकंठ की आँखें लाल हो गई। अपने भाई द्वारा किए गए कार्य पर उन्हें अत्यधिक क्रोध आ रहा था। उसने बताया कि लाल बिहारी ने उससे धृष्टता (दुस्साहस, दुर्व्यवहार) की। पहले तो उसने उसके (आनन्दी के) मायके की निन्दा की, फिर अपने भाई-भाभी को बुरा-भला कहा और आखिर में उसने अपनी खड़ाऊँ उठाकर मुझ पर दे मारी। इस घटना को सुनाते समय आनन्दी अपने पति के समक्ष रोकर अपने मन को शांत कर रही थी।

बच्चो! आज हमने इस कहानी को पृष्ठ संख्या - पैंतीस तक पढ़ा व समझा है। सभी छात्र इस कहानी को आज पढ़ाए गए पृष्ठ संख्या 35 तक पुन: पढ़ेंगे व ध्यानपूर्वक समझने का प्रयास भी करेंगे।

कक्षा - नौवीं शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

विषय - हिन्दी साहित्य (पाठ - ८ 'बड़े घर की बेटी')

गृहकार्य

निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

"वह एक सीधा - साधा देहाती गृहस्थ का मकान था, किन्तु आनन्दी ने थोड़े दिनों में ही अपने आप को इस नई परिस्थिति के ऐसा अनुकूल बना लिया, मानो विलास के सामान कभी देखे ही न थे।"

प्रश्न (i) 'सीधा - सादा गृहस्थ' — से किसकी ओर संकेत है? उसका परिचय दीजिए।

प्रश्न (ii) आनन्दी के पिता उसके विवाह को लेकर किस प्रकार के धर्म संकट में थे?

प्रश्न (iii) आनन्दी के मैके और ससुराल के वातावरण में क्या अंतर था?

प्रश्न (iv) आनन्दी और लालविहारी की तकरार किस बात पर शुरू हुई?

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]